

## ७. रचना और भाषाशैली

प्रस्तुत ग्रन्थविभागमें सूत्र नहीं हैं। सत्प्ररूपणाका जो विषय ओघ और आदेश अर्थात् गुणस्थान और मार्गणा-स्थानोंद्वारा प्रथम १७७ सूत्रोंमें प्रतिपादित हो चुका है उसीका यहां वीस प्ररूपणाओं द्वारा निर्देश किया गया है।

इस वीस प्रकारकी प्ररूपणाके आदिमें टीकाकारने ' ओघेण अत्थि मिच्छाइट्ठी० सिद्धा चेदि' इस प्रकारसे सूत्र दिया है और उसे ओघसूत्र कहा है। हमारी अ. प्रतिमें इसपर ७४, आ. में १७४, तथा स. में १७५ की संख्या पायी जाती है जो उन प्रतियोंकी पूर्व सूत्रगणनाके क्रमसे है। पर स्पष्टतः वह सूत्र पृथक् नहीं है, धवलाकारने पूर्वोक्त ९ से २३ तकके ओघ सूत्रोंका प्रकृत विषयकी वहांसे उत्पत्ति बतलाने के लिए समष्टिरूपसे उल्लेख मात्र किया है।

इस भागमें गाथाएं भी बहुत थोड़ी पायी जाती है, जिसका कारण यहां प्रतिपादित विषयकी विशेषता है। अवतरण गाथाओंकी संख्या यहां केवल १३ है जिनमेंसे एक ( नं. २२०) कुंदकुंदके बोधपाहुडमें और दो (२२३, २२४) प्राकृत पंचसंग्रहमें१ (यह ग्रन्थ अभी अभी 'वीरसेवा मन्दिर सरसावा' द्वारा प्रकाशमें लाया जा रहा है। उसमें उक्त गाथाओंके होनेकी सूचना हमें वहांके पं. परमानन्दजी शास्त्री द्वारा मिली।) भी पायी जाती हैं। गाथा नं. ( २२८) 'उत्तं च ऍडियाए' ऐसा कहकर उद्धृत की गई है। हमने इस गाथाकी खोज कराई, पर वीरसेवामंदिरके पं. परमानन्दजी शास्त्रीने हमें सूचित किया की यह गाथा न तो प्राकृत पंचसंग्रह में है न तिलोयपण्णत्तिमें और न श्वेताम्बरीय कर्मप्रकृति, पंचसंग्रह, जीवसमास विशेषावश्यक आदि ग्रन्थोंमें है। जान पडता है 'पिंडिका' नामका कोई प्राचीन ग्रन्थ रहा है जो अबतक अज्ञात है। इन तीन गाथाओंको छोड़कर शेष सब कहीं जैसी की तैसी और कहीं किंचित् पाठभेदको लिए हुए गोम्मटसाए जीवकांडमे भी संगृहीत हैं।

इस विभागमें संस्कृत केवल प्रारंभमें थोड़ीसी पायी जाती है। शेष समस्त रचना प्राकृतमें ही है। पर यहां विषयकी विशेषता ऐसी है कि उसमें प्रतिपादन और विवेचनकी गुंजाइश कम है। अतएव जैसी साहित्यिक वाक्यशैली प्रथम विभागमें पायी जाती है वैसी यहां बहुत कम है। जहां कहीं शंका - समाधानका प्रसंग आ गया है, वहीं साहित्यिक शैली पायी जाती है। ऐसे शंका समाधान इस विभागमें ३३ पाये जाते हैं। शेष भागमें तो गुणस्थान और मार्गणास्थानकी अपेक्षा जीवविशेषोंमें गुणस्थान आदि वीस प्ररूपणाओंकी संख्या मात्र गिनायी गयी है, जिसमें वाक्यरचनाकी व्याकरणात्मक शुद्धिपर ध्यान नहीं दिया गया। पद कहीं सविभक्तिक हैं और कहीं विभक्ति-रहित अपने प्रातिपदिक रूपमें। समास-बंधन भी शिथिलसा पाया जाता है, उदाहरणार्थ 'आहारभयमेहुणसण्णा चेदि' (पृ. ४९५)। चेदि से पूर्वकेपद

-----

समासयुक्त समझे जाय, या अलग? यदि अलग अलग लें तो सब विभक्तिहीन रह जाते हैं, यदि समासरूप लें तो 'च' की कोई सार्थकता नहीं रह जाती। संशोधनमें यह प्रयत्न किया गया है कि यथाशक्ति प्रतियोंके पाठको सुरक्षित रखते हुए जितने कम सुधारसे काम चल सके उतना कम सुधार करना। किन्तु अविभक्तिक पदोंको जानबूझकर विना यथेष्ट कारणके सविभक्तिक बनानेका प्रयत्न नहीं किया गया। इस कारण प्ररूपणाओंमें बहुतायतसे विभक्तिहीन पद पाये जायेंगे।

इन प्ररूपणाओंमें आलापोंके नामनिर्देश स्वभावतः पुनः पुनः आये हैं। प्रतियोंमें इन्हें प्रायः संक्षेपतः आदिके अक्षर देकर बिन्दु रखकर ही सूचित किया है, जैसे 'गुणद्वाण' के स्थानपर गुण०, 'पज्जत्तीओ' के स्थानपर प० आदि। यदि सब प्रतियोंमें ये संक्षिप्त रूप एकसे होते, तो समझा जाता कि वे मूलादर्श प्रतिके अनुसार है, अतः मुद्रितरूपमें भी उन्हें वैसे ही रखना कदाचित् उपयुक्त होता। किन्तु किसी प्रतिमें एक अक्षर लिखकर, किसीमें दो अक्षर लिखकर आदि भिन्नरूपसे संक्षेप बनाये गये हैं और किसी प्रतिमें वे पूरे रूपमें भी लिखे हैं। इस प्रकार बिन्दुसहित संक्षिप्तरूप कारंजाकी प्रतिमें सबसे अधिक और आराकी प्रतिमें सबसे कम

हैं। इस अव्यवस्थाको देखते हुए आदर्श बिन्दु हैं या नहीं, इस विषयमें शंका हो जानेके कारण हमने इन संक्षिप्त रूपोंका उपयोग न करके पूरे शब्द लिखना ही उचित समझा।

प्रत्येक आलाप में बीस बिस प्ररूपणाएं है। पर कहीं कहीं प्रतियोंमें एक शब्दसे लगाकर पुरे आलाप तक भी छूटे हुए पाये जाते हैं। इनकी पूर्ति एक दूसरी प्रतियोंसे हो गई है, किन्तु कहीं कहीं उपलब्ध सभी प्रतियोंमें पाठ छूटे हुए हैं जैसा कि पाठ टिप्पण और प्रति-मिलान और छूटे हुए पाठोंकी तालिकासे ज्ञात हो सकेगा। इन पाठोंकी पूर्ति विषयको देख समझकर कर्ताकी शैलीमें ही उन्हींके अन्यत्र आये हुए शब्दोंद्वारा कर दी गई है। जहां ऐसे जोड़े हुए पाठ एक दो शब्दोंसे अधिक बडे है वहां वे कोष्ठकके भीतर रख दिये गये हैं।

मूलमें जहां कोई विवाद नहीं है वहां प्ररूपणाओंकी प्रत्येक स्थानमें संख्या मात्र दी गई है। अनुवादमें सर्वत्र उन प्ररूपणाओंकी स्पष्ट सूचना कर देनेका प्रयत्न किया गया है और मूलका सावधानीसे अनुसरण करते हुए भी वाक्यरचना यथाशक्ति मुहावरेके अनुसार और सरल रखी गई है।

मूलमें जो आलाप आये है उनको और भी स्पष्ट करने तथा दृष्टिपात मात्रसे ज्ञेय बनानेके लिये प्रत्येक आलापका नकशा भी बनाकर उसी पृष्ठपर नीचे दे दिया गया है। इनमें संख्याएं अंकित करनेमें सावधानी तो पूरी रखी गई है, फिर भी संभव है दृष्टिदोषसे दो चार जगह एकाध अंक अशुद्ध छप गया हो। पर मूल और अनुवाद सामने होनेसे उनेसे उनके कारण पाठकोंको कोई भ्रम न हो सकेगा। नकशोंका मिलान गोम्मटसारके प्रस्तुत प्रकरणसे भी कर लिया गया है।